ताकि स्मृति बची रहे

ISBN	:	978-93-91718-01-5
सम्पादन	:	**स्वप्निल श्रीवास्तव**
प्रकाशन वर्ष	:	2021
प्रकाशक	:	**आपस पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स** एल.आई.जी.-57 कोशलपुरी फेस-1 फ़ैज़ाबाद, अयोध्या, उत्तर प्रदेश-224001
Email		**aapaspublishers@gmail.com,** **dr.vmani19@gmail.com**
		9628961860, 9919394133
संस्करण प्रथम	:	2021
आवरण परिकल्पना	:	आपस टीम
सहयोग राशि	:	220/- (दो सौ बीस रूपये मात्र)
मुद्रक	:	श्रीजी ग्राफिक्स, दिल्ली

अनुक्रम

	आलेख	लेखक	पृष्ठ
1-	ताकि स्मृति बची रहे	- स्वप्निल श्रीवास्तव	11-14
2-	मेरी यादों में मंगलेश	- आनंद स्वरूप वर्मा	15-23
3-	परिचय के सात साल	- असगर वजाहत	24-26
4-	एक दोस्त का जाना	- अजय सिंह	27-29
5-	एक मित्र जो भुलाये न बने	- विष्णु नागर	30-36
6-	कवि का काम	- असद जैदी	37-40
7-	अपने शब्दों की रोशनी में.	- ओम निश्चल	41-53
8-	स्मरण मंगलेश	- विमल कुमार	54-60
9-	स्मृति की केन्द्रीय उपस्थिति	- रवीन्द्र त्रिपाठी	61-63
10-	मैं चाहता हूँ कि स्पर्श बचा रहे	- अपूर्वानन्द	64-68
11-	कविता के घरवासी	- पंकज चतुर्वेदी	69-86
12-	मृत मनुष्य की ज्यादा कहन	- शिवप्रसाद जोशी	87-108
13-	रोज़ याद करने की जरूरत	- व्योमेश शुक्ल	109-113
14-	सघन संवेदना के कवि	- गौरी त्रिपाठी	114-120

सघन संवेदना के कवि

- गौरी त्रिपाठी

हम अपने समाज से कविता को टूटने का अनुभव जब तब करते रहते हैं। कोई भी कवि जो इस संकट के बारे में ज्यादा गंभीरता से सोचता है वह रचना के स्तर पर भी उस से जूझता है। ऐसे ही कुछ समकालीन कवि अपनी कविताओं में समाज और उनके विसंगतियों की चिंता करते रहते हैं। वह आने वाले जीवन के लिए कविताएँ लिखते हैं। ऐसे ही एक कवि है मंगलेश डबराल। मंगलेश डबराल समकालीन कवियों में चर्चित नाम है। राजेश जोशी, अरुण कमल और उदय प्रकाश के समकालीन। समकालीन कविता की विशेषता कह लें या खामी लगभग इस कविता में फर्क करना मुश्किल हो जाता है क्योंकि वह अपने समय को एक साथ और लगभग जैसा प्रस्तुत करते हैं। अपने तरीके के ये अलग कवि हैं। उनकी कविता का एक साख रंग है, इनकी कविता में समकालीन समय अपने पूरे बिखराव के साथ मौजूद दिखाई देता है। पहाड़, नदी, जंगल ही नहीं है बल्कि सत्ता का विरोध, मानवता की खोज हुई है। मानवीयता से जुड़कर कविता ज्यादा आसान हो जाती है, जो कि इनकी कतिवाओं में बहुतायत दिख जाती है। सहृदयता और अनुभूति संपन्नता दो विशेष मूल्य मंगलेश की कविता में हर जगह दिखाई देते हैं। उनकी कविता की पहली शर्त यही है कि हम मनुष्य बने रहें। ऐसा आग्रह वह बार-बार अपनी कविता में करते रहते हैं। इनकी कविता नई पीढ़ी के संघर्षों को भी सामने लाती है, साथ ही पहाड़ की संवेदनाएँ भी उसी संघर्ष के साथ मिलकर कविता बन जाती हैं। अपने को मार्क्सवादी कवि के रूप में घोषित करते हैं "मैं एक मार्क्सवादी हूँ लेकिन शायद स्वतंत्र मार्क्सवादी।" सर्वहारा क्रांति का सपना हर बड़े कवि की तरह उन्होंने भी देखा था। दरअसल क्रांति करने की बात और समाज बदलने की बात एक बड़ा कवि ही कर सकता है। जिसके मूल में समाज की चिंताएँ हों उसके छोटे-छोटे सुख हों।

हिन्दी कविता में मंगलेश डबराल 80 के दशक में आते हैं और उनका पहला ही काव्य संग्रह 'पहाड़ पर लालटेन' बहुत चर्चित होता है। शुरुआती दौर में वे गद्य के साथ साहित्य की तमाम विधाओं में लिखना शुरू करते हैं लेकिन शुरुआत कविता से ही होती है। उन्हें लगता है कि वर्तमान समाज और समय की विद्रूपताओं को बता पाने का सबसे अच्छा जरिया है कविता। 'पहाड़ पर लालटेन' कविता संग्रह में पहाड़ का जीवन भी है और लालटेन के माध्यम से एक उम्मीद भी है। यह कविता संग्रह समाज में फैले हुए उदासी और मुक्ति का संकल्प एक साथ दिखाता है। जीवन